मनोज
कॉमिक्स
मूल्य 7.00
बम के गोले
राम-रहीम
Ankur n Arjun
Presents
CHAVAN STUDIO.
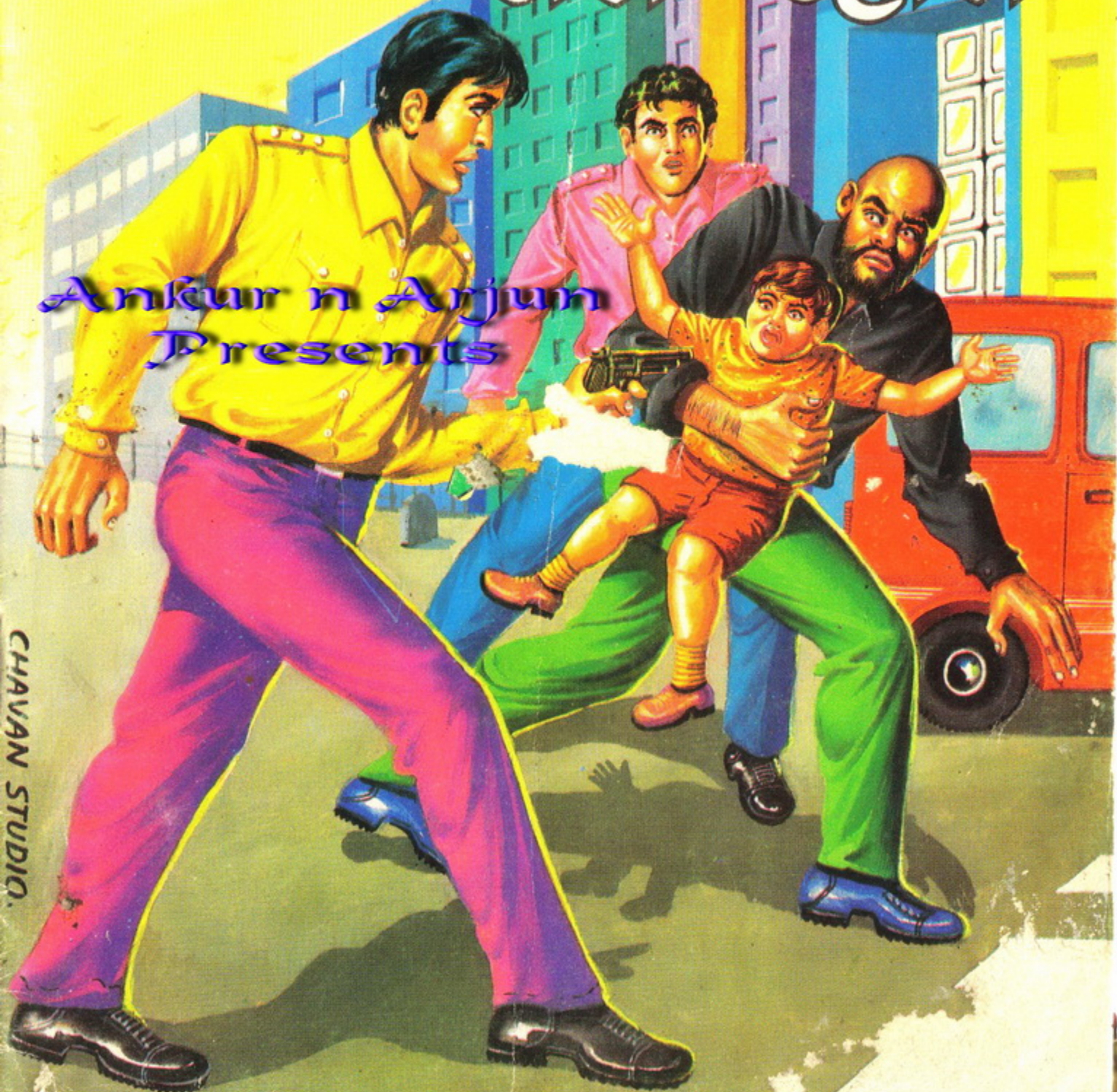
लेखक :- बिमल चटर्जी.   चित्रांकन:- त्रिशूल कॉमिको आर्ट.

आपने मनोज कॉमिक्स के पिछले दो अंकों "अपने देश का गद्दार" और "हवा के बेटे" में पढ़ा— राम अपने दोस्त रहीम की बहन की शादी मे पाकिस्तान जाता है, लेकिन वहां पाकिस्तानी हुकूमत के कुचक्र में फंस जाता है। रहीम के पिता मेजर आसिफ खान और रहीम को किसी तरह भारत भेजने की नाकाम कोशिश करते हैं, लेकिन स्वयं ही पाकिस्तानी जासूस फज्जे खां के चंगुल में फंस जाते हैं। जबकि राम-रहीम किसी तरह भाग निकलते हैं और एक खण्डहर में जा पहुंचते हैं। अगले दिन वे कार में जा रहे एक दम्पति को अपने कब्जे में कर उनके ही पैसों से उनकी ही कार द्वारा बाजार पहुंचते हैं और खाने-पीने व मेकअप का सामान खरीदकर वापस उसी खण्डहर में लौट आते हैं। वहां राम अपना और रहीम का मेकअप करता है। और दोनों पति-पत्नी का रूप धारण कर लेते हैं। तभी उन्हें कार वाले दम्पंति का ध्यान आता है, जिन्हें उन्होंने कार के भीतर ही बांधकर रख छोड़ा होता है, और जब वे उनकी सुध लेने वहां पहुंचते हैं, जहां उन्होंने कार खड़ी की होती है तो उनके पैरों तले की धरती निकल जाती है, क्योंकि न तो वहां कार होती है और न वह दम्पति। आगे क्या है, यह प्रस्तुत चित्रकथा में पढ़ें :-

दोनों ने जल्दी-जल्दी अपना सामान समेटा...

...और पूरी शक्ति से एक तरफ दौड़ पड़े।

ठीक तभी-
पीं-ई-ई-ई
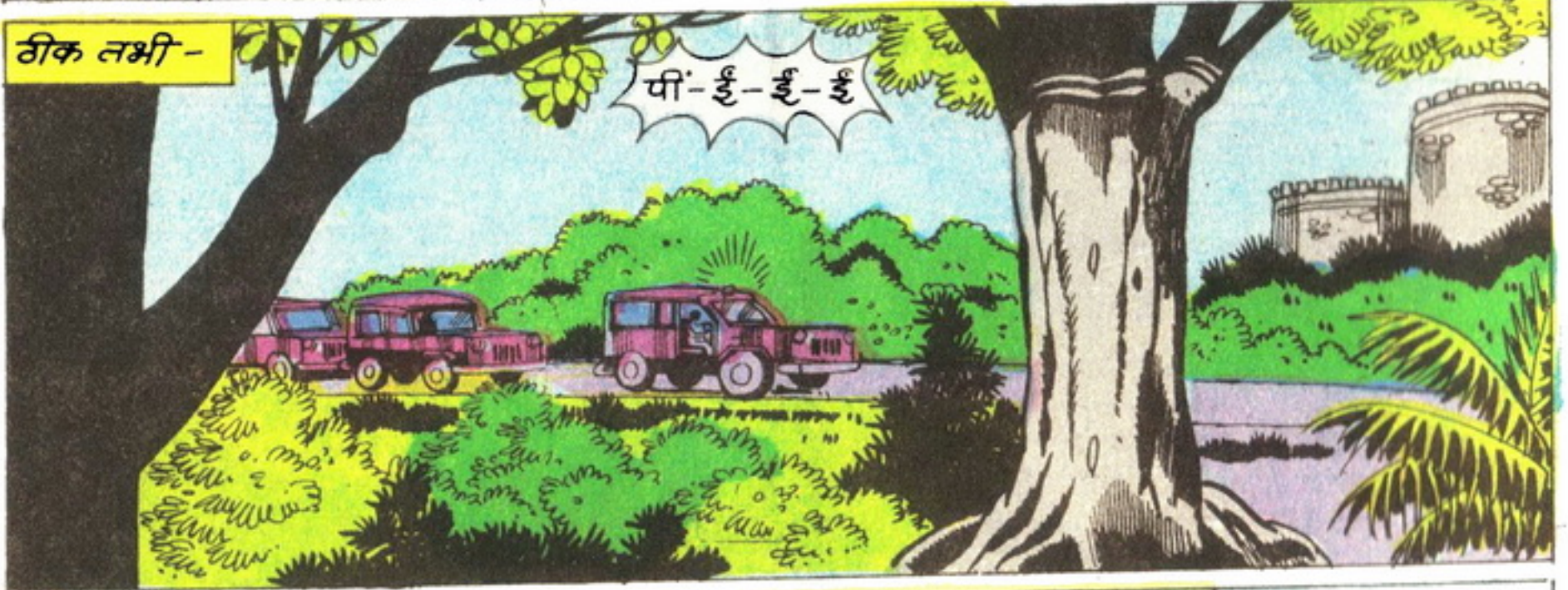
पलक झपकते ही पुलिस फोर्स ने उस इमारत के चारों ओर घेरा डाल दिया।
भीतर चलो। ध्यान रहे, वे दोनों छोकरे किसी भी कीमत पर बचकर नहीं निकलने चाहिये।
यस सर!

लेकिन पूरी इमारत की तलाशी लेने पर–
सर, यहां तो कोई भी नहीं है। इंसान तो इंसान, यहां किसी चिड़िया के बच्चे की मौजूदगी का भी नामोनिशान नहीं है।
तुम गलत कह रहे हो खान। बेशक इस समय यहां कोई नहीं है, लेकिन यहां जो चिह्न हैं, उनसे यह साफ पता चलता है कि कुछ देर पहले तक यहां कोई-न-कोई व्यक्ति थे और उन्होंने यहां खाना भी खाया है...

...वह देखो, कागज और जूठन!
ओह!

जिन्होंने यहां खाना खाया, क्या वे वही छोकरे थे सर!
शायद वही थे। इसीलिये वे खतरे की भनक लगते ही यहां से भाग निकले हैं...

... सुनो हैदर, तुम तुरन्त वायरलेस द्वारा हैडक्वार्टर को यहां की घटना के बारे में सूचित कर दो तथा पूरी फोर्स के साथ चारों तरफ फैल जाओ और उन भगोड़ों की तलाश करो।
ठीक है सर, लेकिन आप?

मैं खुफिया विभाग के चीफ मि. फन्ने खां को फोन करने पास ही के पब्लिक बूथ पर जा रहा हूं।
समझ गया सर! आप अपना काम कीजिये, मैं अपना काम करता हूं।
गुड!

उसके बाद हवलदार हैदर इमारत से बाहर निकलकर जीप में लगे वायरलेस सैट पर हैडक्वार्टर को रिपोर्ट देने लगा...
तथा इंस्पेक्टर एक जीप पर सवार होकर निकटवर्ती पब्लिक बूथ की ओर चल पड़ा।
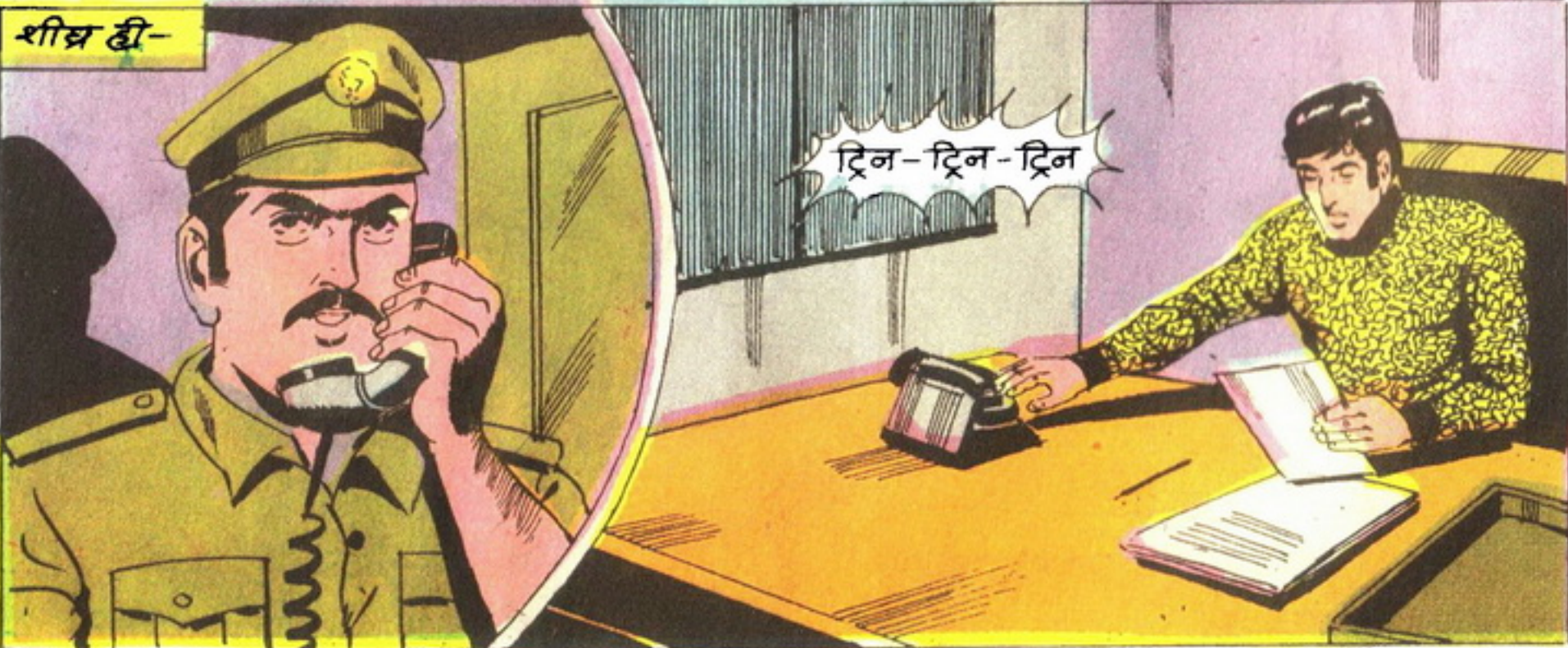
शीघ्र ही-
ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन

फिर वह अन्त में बोला –
जब वे लड़के उन्हें बेहोश समझ कार में ही बांधकर इमारत में चले गये तो उन्होंने किसी तरह स्वयं को बंधनमुक्त किया और सीधे थाने आकर रिपोर्ट दर्ज कराई।
बेकार की बातें छोड़ो इंस्पेक्टर और यह बताओ कि उनकी रिपोर्ट पर तुमने क्या कार्यवाही की?

जनाब, उनकी सूचना पर मैं तुरन्त फोर्स के साथ उस इमारत में पहुंचा। मुझे उनकी सूचना पर यही संदेह हुआ कि कहीं वे दोनों बच्चे वही न हों, जिनको तलाश करने का आपने हमें आदेश दिया था...
...लेकिन वे दोनों बच्चे जो भी थे, हमें वहां नहीं मिले, परन्तु ऐसे चिह्न हमें वहां अवश्य मिले हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि गत् रात से वे वहां मौजूद थे और खतरे का आभास पाकर निकल भागे हैं।

यू फूल! तुमने मुझे फोन करने की बजाय उन्हें उसी समय आसपास तलाश क्यों नहीं किया?
स... सर, मैं फोर्स को उनकी तलाश में लगा चुका हूं।

ठीक है। तुम शिकारी कुत्तों का प्रबन्ध करके उसी इमारत में पहुंचो, मैं भी वहीं पहुंच रहा हूं।

यस सर!

इधर राम और रहीम एक अन्य कच्चे मार्ग से शहर की तरफ न जाने कब तक दौड़ते रहे, फिर—
बस राम भइया, अब रुक जाओ। हम शहर के निकट आ पहुंचे हैं। इस पग-डण्डी के खत्म होते ही हम मुख्य सड़क पर पहुंच जायेंगे और वहां से शहर के भीतर पहुंचने में केवल पांच मिनट लगेंगे।
ओह!

दोनों रुककर सुस्ताने लगे—
रहीम, तुम अपना सामान वस्त्रों में छुपा लो। तुम्हारा इतना सारा सामान हाथ में लिये चलना किसी को भी संदेह में डाल सकता है।
लेकिन इतना सारा सामान मैं वस्त्रों में कहां छिपा पाऊंगा!

शीघ्र ही-

जनाब, हमें डबल बेड रूम चाहिये।

मिल जायेगा जनाब, लेकिन चार्जिस ९०० रुपये प्रतिदिन का होगा।

ठीक है। यह पांच सौ रुपये एडवांस रखिये और हमें कमरा दिखाइये।
शुक्रिया।

रजिस्टर में उनके नाम आदि दर्ज करने के बाद–
वेटर, साहब को रूम नम्बर थर्टी टू में ले जाओ।
जी!

वेटर राम-रहीम को उनके कमरे में ले गया–
यदि आपको किसी वस्तु की जरूरत हो तो यह बटन दबा दीजियेगा, मैं हाजिर हो जाऊंगा।
ठीक है। सबसे पहले तुम हमारे लिये दो कप कॉफी लाओ।

वेटर के जाने के बाद–
राम भइया, क्या मैं चेहरे से परदा उठा लूं? पता नहीं क्यों मुझे इस परदे से उलझन-सी हो रही है।
नहीं, अभी नहीं। पहले वेटर को कॉफी दे जाने दो। और हां, ध्यान रहे, यदि कोई तीसरा हमारे पास हो तो तुम्हें जनानी आवाज़ में ही बात करनी है।
ठीक है!

इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम के इशारे पर कुत्तों के ट्रेनर कुत्तों को खाने-पीने की वस्तुएं व आसपास का स्थान सुंघाने लगे, जबकि फन्ने खां आसपास का निरीक्षण करता हुआ एक दूसरे कमरे के द्वार की ओर बढ़ गया।
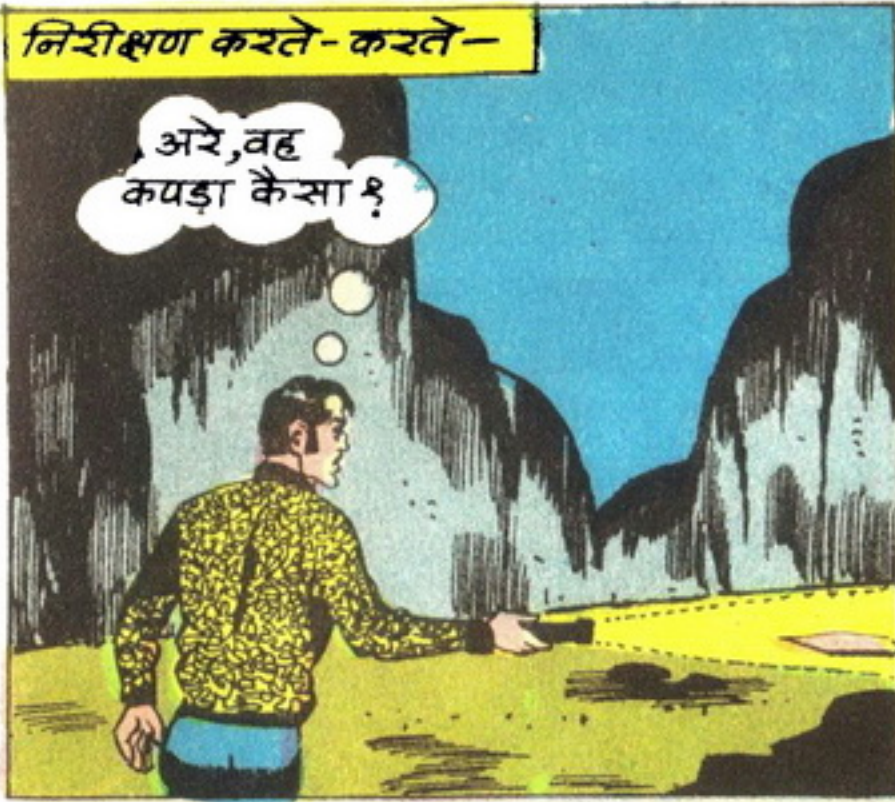
रूमाल साफ है। अवश्य ही यह रूमाल राम-रहीम में से किसी एक का होगा, वरना इस इमारत में तो कोई मुद्दत से नहीं रहा। यदि यह यहां रहने वाले का होता तो अब तक सड़-गल चुका होता।
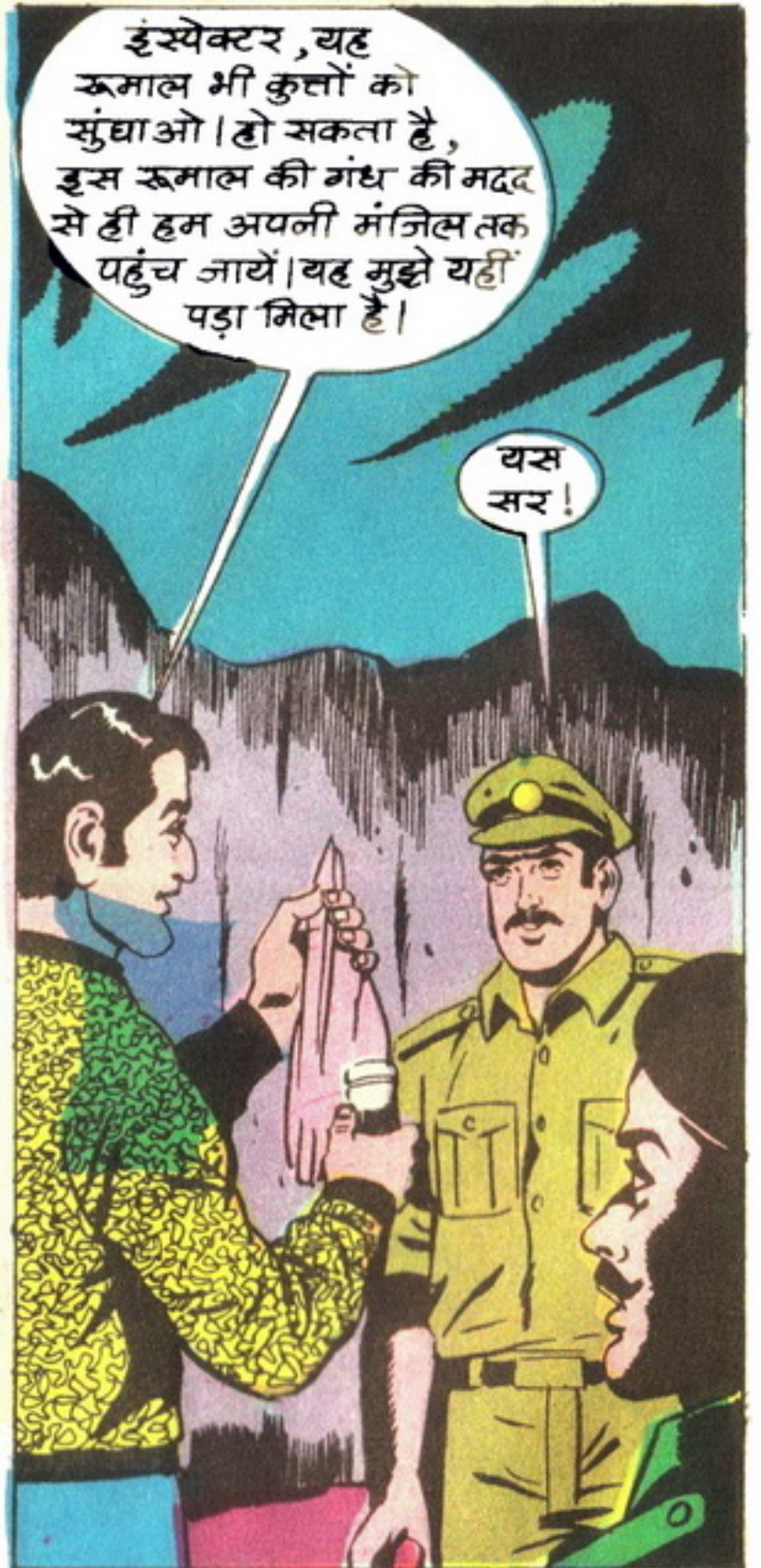
इंस्पेक्टर ने एक-एक कर रूमाल सभी कुत्तों को सुंघाया...

...और शीघ्र ही सारे कुत्ते अपने साधकों के इशारे पर रूमाल के स्वामी की गंध सूंघते हुए इमारत से बाहर निकलकर उसी रास्ते पर दौड़ पड़े, जहां से राम-रहीम गुजरे थे। फन्ने खां, इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम व कुछ पुलिसकर्मी भी उनके पीछे थे।
हुम्म! तो वे छोकरे इस कच्चे मार्ग से होकर गुजरे हैं।

जब वे शहर की मुख्य सड़क पर पहुंचे-
ओह! तो वे इसी शहर में आये हैं। लेकिन कम्बख्त पुलिस व लोगों की नजरों से बचकर शहर में घुस कैसे गये, जबकि आज के तमाम अखबारों के मुख्य पृष्ठों पर उनकी ही फोटो छपी है।

शीघ्र ही-
ओह! कुत्ते तो हमें इस होटल में ले आये। तो क्या वे यहीं ठहरे हैं? अवश्य ही ऐसा होगा।
HOT

अगले ही पल-
इंस्पेक्टर, तुम सिपाहियों को होटल को चारों ओर से घेरने का आदेश देकर मुख्य गेट पर ही रहो। मैं जाकर देखता हूं। मुझे विश्वास है, वे दोनों इसी होटल में टिके हैं।
यस सर!
और फन्ने खां होटल के भीतर प्रविष्ट हो गया।

इधर राम-रहीम एक योजना बनाकर अपने-अपने बिस्तरों पर आराम कर ही रहे थे कि –
ट्रन-ट्रन-ट्रन!
ओह! कौन हो सकता है?
???
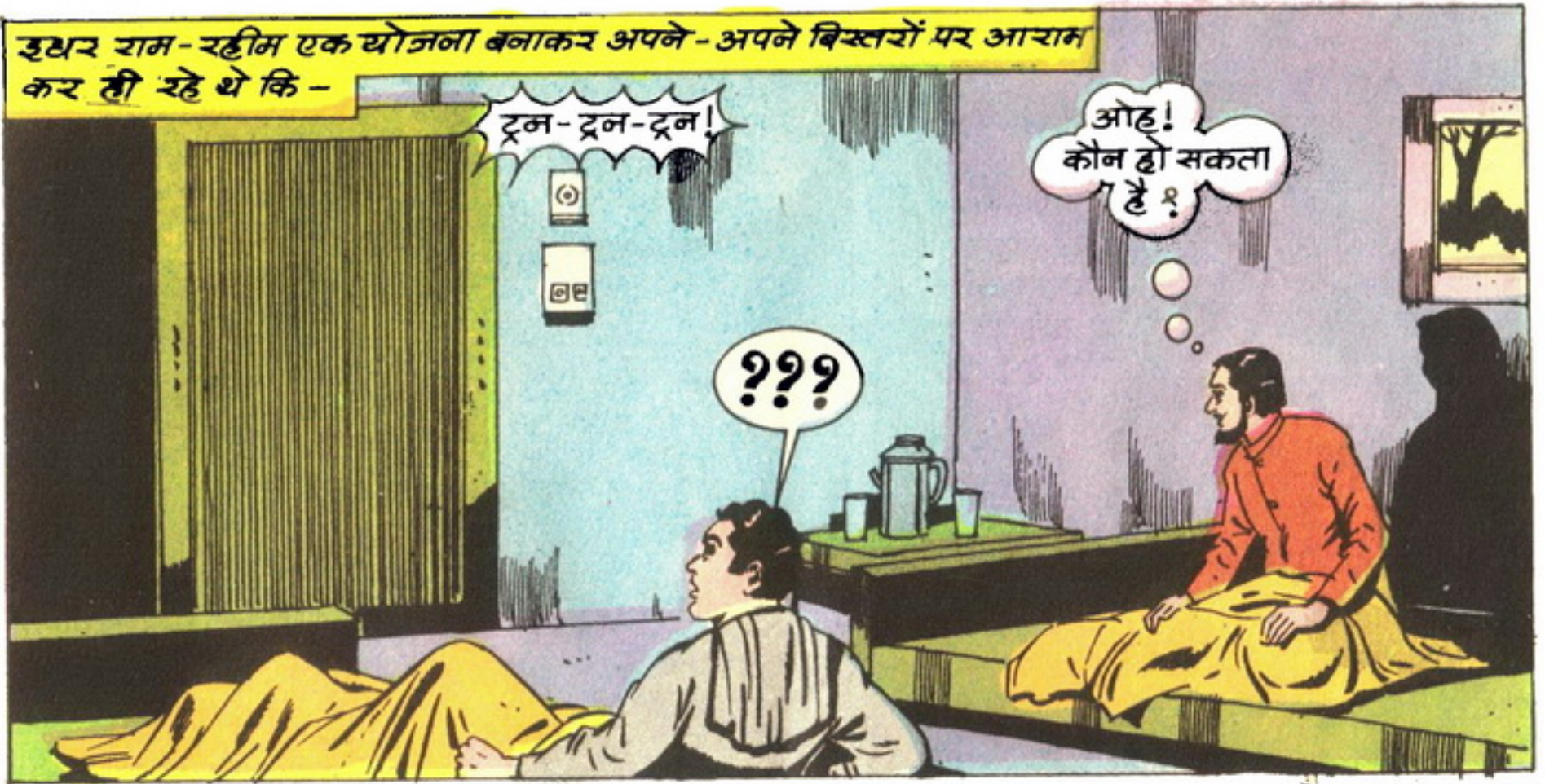
कुछ सोचकर राम उठकर दरवाजे पर पहुंचा–
कौन है?

मैं मैनेजर हूं जनाब! जरा दरवाजा खोलिये! आपसे एक जरूरी काम है।
अच्छा, एक मिनट ठहरिये।

फिर रहीम को मुंह ढकने का इशारा कर राम ने चटकनी खोलने के लिये हाथ बढ़ाया ही था कि –
भौं-भौं-भौं!
हैं! कुत्ते!

भौं-भौं-भौं!
बाहर जरूर कोई खतरा है!

राम भइया, यह बाहर से कुत्तों के भौंकने की आवाज कैसी आ रही है?
शायद शिकारी कुत्तों के साथ पुलिस हमारी गंध सूंघती हुई यहां तक आ पहुंची है।

दरवाजा खोलिये जनाब!
उफ! अब क्या होगा?

आओ, खिड़की के रास्ते निकल भागते हैं।

लेकिन खिड़की के निकट पहुंचते ही--
हे ईश्वर, पुलिस ने तो होटल को चारों ओर से घेर रखा है। निकल भागने का कोई रास्ता नहीं।
यानी हम बुरी तरह फंस चुके हैं?

तभी कुत्तों के भौंकने के साथ-साथ किसी की कर्कश आवाज आई–
भौं-भौं-भौं!
सुनो शैतान छोकरो, होटल को पुलिस ने चारों ओर से घेर रखा है, इसलिये तुम्हारे निकल भागने का कोई रास्ता नहीं है। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम स्वयं को हमारे हवाले कर दो, वरना कुत्तों की मौत मारे जाओगे।
???

तुम्हारा क्या विचार है राम भइया! भागने का तो कोई रास्ता नहीं। क्या हम अपने-आपको इनके हवाले कर दें?
इसके अलावा कोई चारा नहीं, लेकिन हमारी इस गिरफ्तारी से शायद हमें एक फायदा हो जाये।

वह क्या?

हो सकता है, ये हमें उसी कैदखाने में रखें, जहां इन्होंने तुम्हारे पिता को रखा हुआ है। तब उन्हें छुड़ाने में हमें आसानी रहेगी।
हां, यह बात तो है।

तुम रुको, मैं दरवाजा खोलता हूं, लेकिन ध्यान रहे, हमें तुरन्त ही अपना भेद उन पर प्रकट नहीं करना है, यानी हमें मियां-बीवी बन उन्हें धोखा देने का प्रयास अवश्य करना है। समझ गये न?
बिल्कुल समझ गया भइया!
कहकर रहीम ने बुर्के से पुनः चेहरा ढांप लिया।

हाय अल्लाह, कितने भयानक कुत्ते हैं। ऐजी, इन्हें बाहर निकलवाइये ना! मुझे तो डर लग रहा है।

भौं-भौं-भौं!

जनाब, यह सब क्या मजाक है? इन कुत्तों को बाहर निकालिये। जानते नहीं, हमारी क्या हैसियत है?
हा-हा-हा! यदि हम तुम्हारी हैसियत व शख्सियत न जानते होते तो यहां आते ही क्यों मि. राम!
भौं-भौं-भौं!

कहने के साथ ही—
ओह!
उफ! यह नाटक भी काम नहीं आया!

क्यों बच्चे, क्या इन नकली दाढ़ी-मूंछ के उतरने के बाद भी तुम अपनी असली शख्सियत से मुकरोगे?
मैं जानता हूं कि मैं पाकिस्तानी हुकूमत की कैद में फंस चुका हूं, लेकिन तुम भी याद रखना, जब हमारे देश के हुक्मरानों को मेरे कैद होने तथा तुम्हारे देश के नीच इरादों का पता चलेगा तो वे तुम्हारे देश की ईंट से ईंट बजा देंगे। तुम्हें यह सौदा बहुत महंगा पड़ेगा।

खामोश गुस्ताख छोकरे! ज्यादा जुबान चलाई, तो जुबान काटकर रख दी जायेगी।
तड़ाक
आह!
राम भइया!

हा-हा-हा! नवाब साहब की बेगम ने तो स्वयं ही अपना परिचय दे दिया!

सिपाहियो, इनकी तलाशी लेकर इनके हाथ बांध दो, तब तक मैं एक जरूरी फोन कर लूं।
यस सर!

फज्ले खां प्रसन्न मुद्रा में एक तरफ रखे फोन की ओर बढ़ गया और सिपाही अपने कार्य में जुट गये।

फन्ने खां ने फोन पर ब्रिगेडियर खान से सम्बन्ध स्थापित किया।
हैलो! जनाब, मैं फन्ने खां बोल रहा हूं।
फिर फन्ने खां ने ब्रिगेडियर खान को अपनी महान् सफलता के विषय में बता दिया।

जब तक फन्ने खां फोन से निपटा, तब तक सिपाही राम-रहीम और उनके सामान की तलाशी लेकर तथा उनका मेकअप उतारकर उनके हाथ बांध चुके थे।
ले चलो इन्हें बाहर। इनके लिये एक स्पेशल गाड़ी कुछ ही देर में आती ही होगी।

जब वे बाहर निकले तो राम-रहीम को बन्दिश में देखकर इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम का चेहरा भी प्रसन्नता से खिल उठा।
मुबारक हो सर! आखिर हम अपने मकसद में कामयाब हुए।
यह सब तुम्हारी मुस्तैदी का ही परिणाम है इंस्पेक्टर! मैं उच्चाधिकारियों से तुम्हारी तरक्की के लिये सिफारिश करूंगा।

थैंक्यू सर!
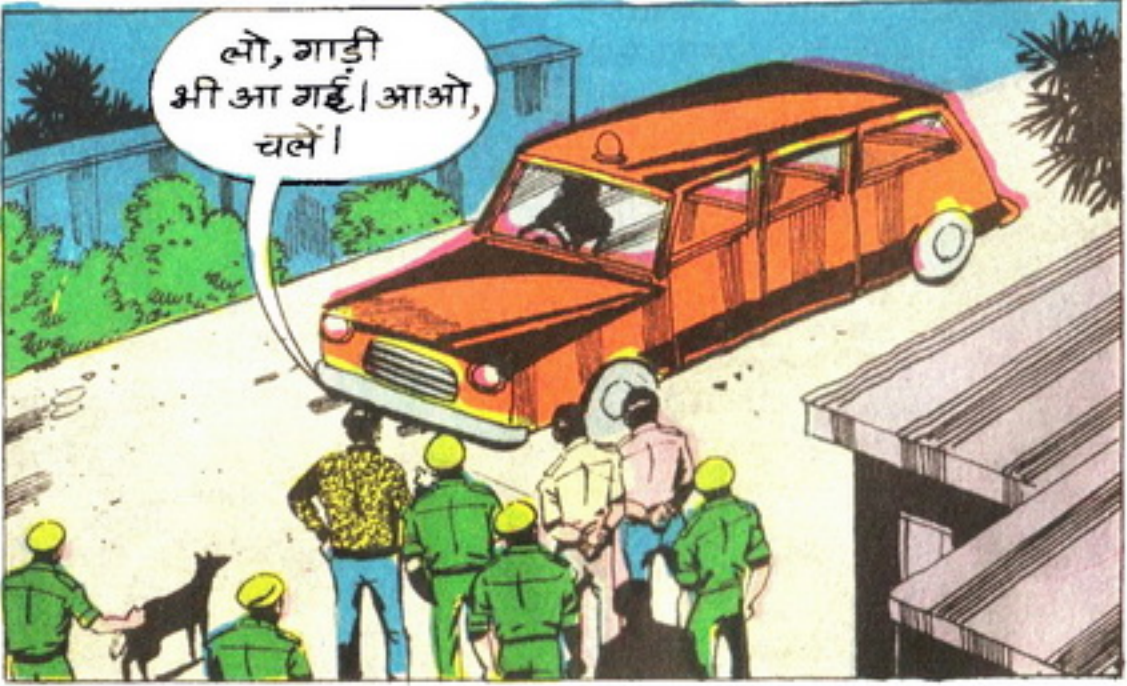
लो, गाड़ी भी आ गई। आओ, चलें।

शीघ्र ही फन्ने खां राम-रहीम व इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम के साथ उस विशेष गाड़ी पर सवार हुआ।
तुम लोग वापस जा सकते हो, लेकिन ध्यान रहे, किसी को कानों-कान भी इस बात का पता नहीं चलना चाहिये कि यहां किनकी गिरफ्तारी हुई है तथा कैदियों को कहां ले जाया जा रहा है। यह बात होटल के मैनेजर व इस होटल में ठहरने वाले सभी मुसाफिरों को भी अच्छी तरह से समझा देना।
यस सर!

और फिर फन्ने खां के इशारे पर ड्राइवर ने गाड़ी होटल के प्रांगण से बाहर निकालकर तीव्र गति से एक ओर दौड़ा दी।

उधर ब्रिगेडियर खान के ऑफिस में-
आपने मुझे बुलाया सर!
हां कर्नल, आपको यह जानकर खुशी होगी कि हम अपने पहले उद्देश्य में सफल हो गये हैं। वह हिन्दुस्तानी छोकरा राम हमारे कब्जे में आ चुका है।

क्या सच सर!
हां! अब आप हिन्दुस्तान में मौजूद सैनिक गुप्तचरों को निर्देश दीजिये कि वे राम के पिता कर्नल राघव से कॉन्टेक्ट करने का प्रयत्न करें और उसे राम की जान की धमकी देकर हमारे लिये काम करने के लिये राजी करें।

सर, आप चिन्ता न करें। मैं अभी भारत स्थित गुप्तचरों से कॉन्टेक्ट करता हूं और उन्हें आवश्यक निर्देश देता हूं।
गुड! तो आप जाइये और जल्द-से-जल्द अपना कार्य निपटा लीजिये।
कर्नल तुरन्त वहां से निकल गया।

उसके जाने के बाद ब्रिगेडियर खान भी अपने ऑफिस में नहीं रुका।
मुझे भी अब रेड कैम्प पहुंचना चाहिये, ताकि उस हिन्दुस्तानी छोकरे को थोड़ा सबक सिखाया जा सके।

इमारत से बाहर निकलकर वह अपनी कार में सवार हुआ और रेड कैम्प की ओर चल पड़ा।
रेड कैम्प, जहां गुप्त रूप से महत्त्वपूर्ण कैदियों को रखा जाता था।
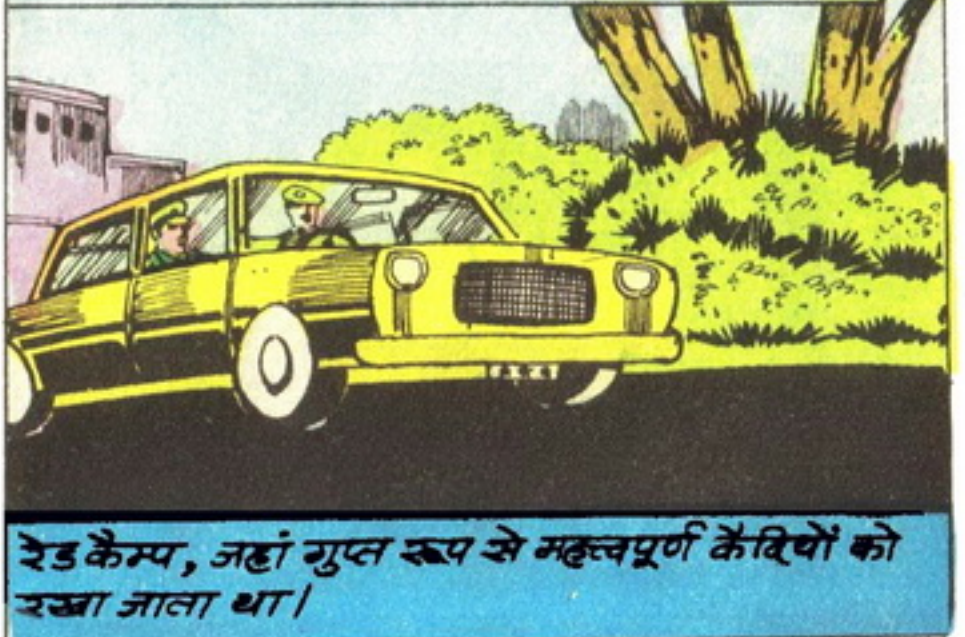
उधर फन्ने खां राम-रहीम को लेकर पहले ही रेड कैम्प में पहुंच चुका था।
मेजर आसिफ को कौन से सैल में रखा गया है?
नम्बर दो में जनाब!

हमें वहीं ले चलो।
बेहतर है जनाब, आइये।

और सैल नम्बर दू में पहुंचते ही राम का विचार सच साबित हो गया। वहां मेजर आसिफ वास्तव में कैद थे।
डैडी!
अंकल!
मेरे बच्चो!

आह! मेरे बच्चो, तुम इन जालिमों के हाथ कैसे लग गये? मैंने तो तुम्हें इन जालिमों से बहुत दूर चले जाने के लिये कहा था।

हा-हा-हा! हमारे हाथों की पहुंच बहुत दूर तक है मेजर! फिर भला ये हमारे हाथों से बचकर कहां जा सकते थे? खैर, चिन्ता मत करो, अब तुम अकेले नहीं रहोगे। इस फौलादी कैदखाने में ये दोनों भी तुम्हारा साथ देंगे।

हम इस कैदखाने में रहेंगे जरूर मि. फन्ने खां, लेकिन केवल कुछ घण्टों के लिये, क्योंकि हवा के बेटों को कोई बांधकर नहीं रख सकता।
हा-हा-हा! लेकिन मैं अच्छी तरह से जानता हूं बच्चे, जो गरजते हैं, वो बरसते नहीं। फिर तुम तो क्या, बगैर हमारी इच्छा के यहां से चिड़िया का बच्चा भी न जा सकता है, न आ सकता है...
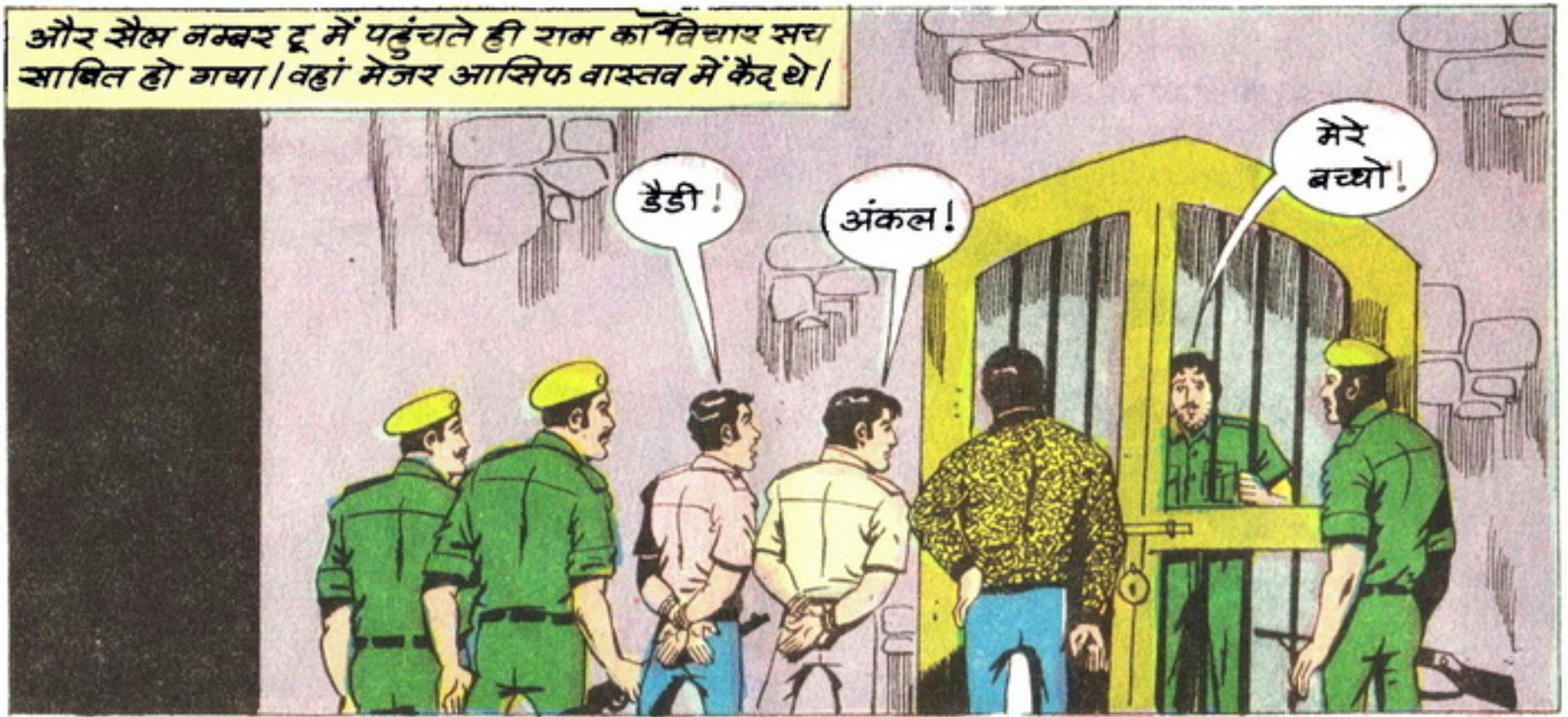
...और तो और, बगैर हमारी इजाजत के बम और गोले भी यहां फूटने की हिम्मत नहीं करते बेवकूफ लड़के!
लेकिन हम वो एटम बम के गोले हैं शैतान, जो फूटते हैं तो आसपास तो क्या, दूर-दूर तक कहर बरपा देते हैं। तुम देख लेना मूर्ख इंसान! जब ये बम फूटेंगे तो तुम्हारा और तुम्हारे इस रेड कैम्प का क्या हाल होगा।

तड़ाक

तुम बदजुबान, अब एक शब्द भी आगे मत बोलना, वरना तुम्हारे से पहले तुम्हारा गद्दार अंकल बेमौत मारा जायेगा।

खुदा के लिये तुम चुप हो जाओ राम भइया, वरना ये जालिम अपनी मनमानी करने से जरा भी पीछे नहीं हटेंगे।
ठीक है रहीम! तुम कहते हो तो चुप हो जाता हूं? वरना शेर का मुंह आज तक कोई बन्द नहीं कर पाया है। हां, उसके हाथ-पैर बांध कर तो कोई गधा भी उस पर सवारी कर सकता है!

तड़ाक्

मूर्ख लड़के, यदि ब्रिगेडियर खान यहां न आ रहे होते तो मैं अब तक सुई चुभो-चुभोकर तेरा सारा जिस्म छलनी कर चुका होता। तेरी किस्मत अच्छी है, जो तू इतना बोल गया और मैं, फन्ने खां, जिससे बड़े-बड़े पाकिस्तानी ऑफिसर भी थर-थर कांपते हैं, चुप हूं...

...सैनिको, डाल दो इन दोनों कुत्तों को भी भीतर। इनसे मैं बाद में निपटूंगा।

और सैनिकों ने राम-रहीम को भी उस कैदखाने में धकेल कर दरवाजे पर ताला लगा दिया।
आओ मेरे साथ। ब्रिगेडियर खान यहां पहुंचने ही वाले होंगे।
यस सर!

उनके वहां से जाने के बाद—
राम बेटे, यह बहुत बुरा हुआ, जो तुम इनके हाथ लग गये। ये तुम्हारे द्वारा तुम्हारे पिता को परेशान करेंगे और हो सकता है...।
आप चिन्ता न करें अंकल! मुझे अपने पिता की देशभक्ति पर ईश्वर से भी ज्यादा विश्वास है। वे सर कटा सकते हैं, लेकिन दुश्मनों के आगे सर झुका नहीं सकते। फिर आप चिन्ता क्यों करते हैं। ये हमें यहां कुछ घण्टों से ज्यादा नहीं रख पायेंगे। मैं यहां कुछ सोच-समझकर ही आया हूं।

क्या ??

राम बेटे, क्या तुम्हारे पास यहां से निकल भागने की कोई योजना है?
जी हां, मैं आपको बताता हूं। सुनिये...।
फिर राम धीमे स्वर में मेजर आसिफ और रहीम को अपनी योजना समझाने लगा।
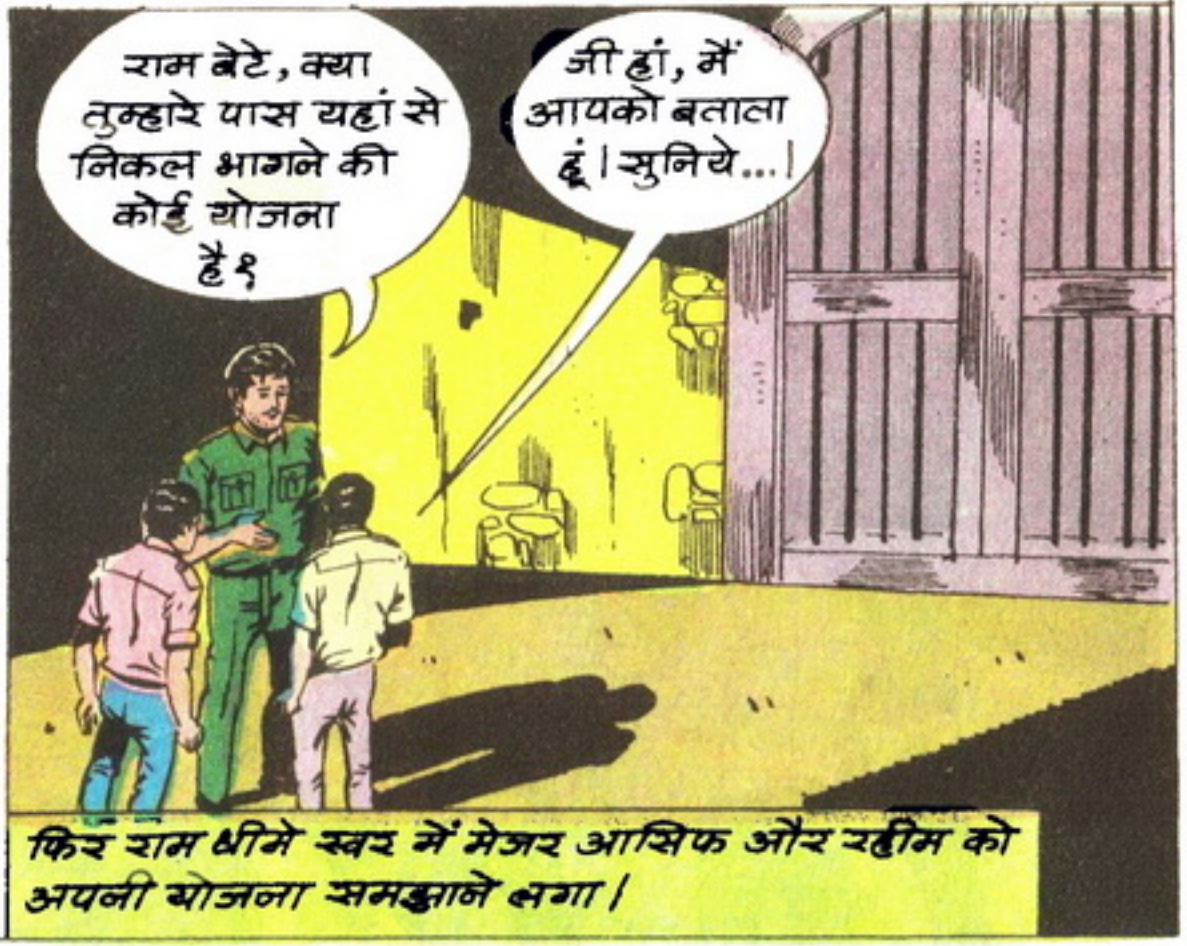
राम की योजना सुनकर मेजर आसिफ और रहीम के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे।
तुम्हारी योजना वाकई बहुत अच्छी है बेटे! यह ठीक है कि उस पर अमल करने के लिये हमें थोड़ा खतरा मोल लेना पड़ेगा।
लेकिन अब्बा, वह खतरा तो हमें मोल लेना ही पड़ेगा, वरना हम यहां से जिन्दगी भर नहीं निकल पायेंगे।

तुम ठीक कहते हो, लेकिन अब चुप हो जाओ। दो सैनिक हमारे कैद-खाने की ओर ही आ रहे हैं।
ओह!

उन दोनों सैनिकों के इशारे पर पहरेदार सैनिक ने उनके कैदखाने का ताला खोल दिया।
ऐ हिन्दुस्तानी छोकरे, केवल तुम्हें हमारे साथ चलना है। चलो, बाहर आओ।
यदि मैं चलने से इंकार करूं तो...?

तो हमें मजबूरन दूसरा तरीका अपनाना पड़ेगा, जिसे तुम हरगिज पसन्द नहीं करोगे। अतः अच्छा यही होगा कि तुम चुपचाप हमारे साथ चलो।

कुछ सोचकर राम ने स्वयं ही उनके साथ जाना उचित समझा।
चलो।
समझदार हो। सीधे चलते रहो। ध्यान रहे, यदि तुमने कोई चालाकी दिखाने की कोशिश की तो भूनकर रख दिये जाओगे।

वे लोग राम भइया को क्यों और कहां ले जा रहे हैं डैडी?
कुछ कह नहीं सकता। शायद ब्रिगेडियर खान आ पहुंचा हो और उसी ने उसे बुलवाया हो।

वास्तव में वे दोनों सैनिक राम को लेकर ब्रिगेडियर खान के पास ही पहुंचे थे।
वैलकम मि. राम!

मुझे यहां किसलिये लाया गया है?
पहले बैठो, फिर कारण भी बता देंगे...

...और तुम दोनों बाहर जाकर अगले आदेश का इन्तजार करो।
यस सर!

जब सैनिक कमरे से बाहर चले गये–

यह लो पैन और जैसा मैं कहता हूं, वैसा अपने सामने पड़े कागज पर लिखो।

क्या मतलब?

जब राम ने पत्र लिखकर उन्हें दे दिया तो उसे वापस कैदखाने में पहुंचा दिया गया।

- क्या राम वास्तव में अपनी योजनानुसार रहीम और मेजर आसिफ के साथ रेडकैम्प से निकलने में सफल हो सका?
- राम ने अपने पिता के नाम जो पत्र लिखा था, उसका क्या परिणाम निकला?
- क्या पाकिस्तानी अधिकारी कर्नल राघव से सम्पर्क कर उन्हें अपने लिये काम करने पर मजबूर कर सके?
- आखिर भारत की सीमा पर स्थित प्रयोगशाला में ऐसा कौन-सा आविष्कार किया जा रहा था, जिससे पाकिस्तानी हुकूमत इतनी परेशान थी और उस आविष्कार के फार्मूले को उड़ाने के लिये एड़ी-चोटी का जोर लगा रही थी?